



देग तेग फतहि॥



सिक्ख धर्म क्या है



- प्रकाशक -

धर्म प्रचार कमेटी
दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

सिक्ख धर्म क्या है

सिक्ख की परिभाषा :

'सिक्ख' शब्द का अर्थ है शिष्य। वह स्त्री या पुरुष जो एक अकाल पुरख परमात्मा में विश्वास रखता है तथा दस गुरु साहिबान की शिक्षाएँ, जो गुरु ग्रन्थ साहिब (सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ) में उल्लेखित हैं, का अनुयायी है और रहित-मर्यादा बाणी में निहित खंडे बाटे के अमृत में विश्वास रखता है, तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता वास्तव में वह सिक्ख है।

संक्षिप्त इतिहास :

सिक्ख धर्म की स्थापना गुरु नानक देव जी के द्वारा हुई। उनका जन्म सन् 1469 ई. में, गांव तलवंडी में हुआ, जिसे अब ननकाणा साहिब (पाकिस्तान) कहते हैं।

शिशुकाल से ही उनके दिव्य प्रकाश की ज्योति के सम्मुख कोई रूढ़िवादी विचार, अंधविश्वास व तत्कालीन आधारहीन रस्में ठहर न सकीं।

गुरु नानक साहिब व उनके बाद के नौ गुरु साहिबान जिन्होंने एक ऐसा अद्भुत आध्यात्मिक उदाहरण प्रस्तुत किया कि आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते हुए, साथ-साथ संसार के अन्य सभी कार्य भी बढ़-चढ़ कर किए जा सकते हैं।

दसम गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी (1666-1708) ने वर्तमान अमृत छकाने अर्थात् गुरु दीक्षा प्रणाली को सन् 1699 ई. में प्रारम्भ किया। इस तरह उन्होंने सिक्खों को एक विशेष पहचान दी। दसम गुरु जी ने जिन पहले पाँच सिक्खों को अमृत छकाया उन्हें पाँच प्यारे कहा गया। इन्हीं पाँच प्यारों ने गुरु साहिब को उनकी माँग पर अमृत छकाया। यह एक ऐसी घटना है जो कि आज तक के मानवता इतिहास में अछूति रही है।

संसार यात्रा पूर्ण करने से पूर्व गुरुजी ने यह आदेश दिया कि 'गुरु ग्रंथ साहिब सिक्खों के धर्म गुरु होंगे तथा सिक्खों की सामूहिक शक्ति, खालसा पंथ में निहित होगी।

‘गुरु ग्रंथ साहिब जी’ सिक्खों के धर्म ग्रंथ का संकलन व संपादन पांचवे गुरु, गुरु अर्जुन देव जी ने सन् 1604 ई. में किया। विश्व में यह पहला व ऐकाएक धर्म ग्रंथ है जिसका संकलन स्वयं धर्म के संस्थापकों ने अपने जीवन काल के दौरान किया। गुरु अर्जुन देव जी ने ही विश्व प्रसिद्ध, श्री दरबार साहिब अमृतसर जो स्वर्ण मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है, का निर्माण करवाया। यह सिक्ख धर्म का केंद्र है।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान सिक्खों को कई तरह की यातनाओं व विषमताओं का सामना करना पड़ा जो कि उस समय की सरकार के संकीर्ण दृष्टिकोण का परिणाम था। तत्कालीन मुगल सरकार ने सिक्खों पर अनेक जुल्म किये। अनेकों सिक्खों ने अपने धर्म की रक्षा और विशेष पहचान बनाए रखने के लिए बलिदान दिए।

18वीं शताब्दी में संप्रदायिक मुगल कट्टरपंथियों द्वारा अपनी राज्य शक्ति के बल से अत्याचार किए गए। सिक्खों को अपने धर्म, विश्वास व विलक्षण अस्तित्व को बचाने के लिए सर्वोच्च बलिदान देने पड़े।

उस समय मुगल साम्राज्य पतन की ओर जा रहा था। अहमद शाह अब्दाली के नेतृत्व में अफगानों ने देश पर कई आक्रमण किए। सिक्खों ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपना राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। इसमें उन्हें महाराजा रणजीत सिंह (1780-1839 ई.) के नेतृत्व में सफलता मिली। अर्द्धशताब्दी तक सिक्ख साम्राज्य स्थापित रहा, जिसे 1849 ई. में अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य में मिला लिया।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में असंख्य सिक्खों ने फाँसी के फंदे को हँसते हुए घूमा, अनेक तरह की यातनाएं सहर्ष स्वीकार की, बहादुरी से गोलियों का सामना किया तथा जेल में लम्बी कैद काटी ताकि देश आजाद हो।

यद्यपि पूरे भारत की जनसंख्या की तुलना में सिक्ख केवल 1.7 प्रतिशत हैं, इसके बावजूद इन्होंने भारतीय सेना, कृषि, खेलकूद, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, व टैक्नोलोजी आदि में अपने कठिन परिश्रम व निष्ठा द्वारा अच्छा नाम कमाया है। इनकी साहसी उद्यमी व जोखिम उठाने की प्रकृति ने इन्हें विश्व के लगभग सभी देशों में पहुँचा दिया है।

धर्म व दर्शन :

सिक्ख धर्म पूर्णतः एक ईश्वरवादी धर्म है। इसकी आस्था एक ऐसे सर्वशक्तिमान परमात्मा में है जो कि सर्वव्यापी, सारी सृष्टि का रचयिता, सर्वविद्यमान, निरवैर (ईर्ष्या रहित), निरभउ (भय रहित) सारी सृष्टि में लिप्त व इससे निर्लिप्त भी है। यह धर्म किसी एक देश, समाज का न होकर सारी मानवता का है और दयालु धर्म है। ईश्वर ने मानव को केवल पापी को दण्ड देने के लिए ही नहीं रचा बल्कि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उस सच्चे ध्येय की खोज करने हेतु व अपनी आत्मा को विकसित कर, परमात्मा में विलीन होने के लिए रचा है, जिससे बिछुड़ कर ही मानव की रचना हुई। यथा:

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु॥

मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु॥

मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि

मरण जीवण की सोझी होई॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 441)

सिक्ख दर्शन की आधारभूत धारणा है कि मानव जीवन की रचना किसी पाप से प्रेरित न होकर, सत्य के स्रोत, ईश्वर से संबंधित है व सच्चा प्रभु इसमें निवास करता है।

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 463)

केवल सिक्ख दर्शन ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण सिक्ख इतिहास व सिक्ख चरित्र का उदगम इसी धारणा से हुआ है।

सिक्ख, जाति प्रथा, मूर्ति पूजा, अंधविश्वास व रीति रिवाजों में विश्वास नहीं रखता। सिक्ख धर्म में देवी देवताओं के अस्तित्व को मिथ्या माना गया है।

सिक्ख धर्म व्यवहारिक धर्म है। यह लोगों की मानववादी सेवा सहनशीलता और सब के प्रति भ्रातृत्व की भावना का प्रतिनिधित्व करता है।

सिक्ख धर्म के अनुसार, संसारिक मनुष्य का जीवन ऐसा बदल सकता है कि उसका ध्येय सम्पूर्ण मानवता की सेवा रहे तथा वह प्रत्येक व्यक्ति के साथ धैर्य व प्रेम का व्यवहार करे।

सिक्ख गुरु साहिबान ने संसार से उन्मुक्त होकर केवल अपनी मुक्ति या निर्वाण की प्राप्ति हेतु संसार छोड़ जाने को कभी उचित नहीं ठहराया। मुक्ति व निर्वाण की प्राप्ति, सच्चाई व ईमानदारी का साधारण जीवन व्यतीत करते हुए व इसी संसार में रहते हुए, अपने दायित्व निभाते हुए ही प्राप्त हो सकती है। यथा:

‘घालि खाइ किछु हथहु देइ॥

नानक राहु पछाणहि सेइ॥’

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 1245)

भावार्थ: वही जिज्ञासु आध्यात्मिक रास्ते को पहचान सकता है जो पूरी लगन व मेहनत करके आजीविका अर्जित करता है और फिर उसमें से दूसरों के साथ बाँट कर खाता है।

गुरु नानक साहिब ने दबे-कुचले वर्ग को एक नई उमंग व आशा की किरण दी, जब उन्होंने इन्हें भाई पद से संबोधित कर समान पद पर सुशोभित किया। गुरु नानक साहिब ने आज के नूतन समय में नवीन अचार-संहिता पर आधारित एक नूतन मानव का निर्माण किया।

वैभव तथा व्यक्तिगत सुखों के लिए अर्जित सुख साधन ईश्वर की कृपा है तथा ये आध्यात्मिक जीवन में कोई बाधा नहीं उत्पन्न करते। सिक्ख दर्शन इस धारणा को स्वीकार नहीं करता कि ‘एक ऊँट तो सुई के छिद्र से आसानी से गुजर सकता है, परन्तु एक अमीर आदमी ईश्वर के घर में प्रवेश नहीं पा सकता। सिक्ख दर्शन में स्पष्ट है:

कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी

तिनी विचे माइआ पाइआ॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 921)

सिक्ख दर्शन निराशावाद को भी स्वीकार नहीं करता। वह तो उत्साह व आनंद अथवा चढ़दी कला का मार्ग है। इस धारणा को भी सिक्ख दर्शन स्वीकार नहीं करता कि पापी का विरोध न करो। अगर कोई दायें गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी आगे कर दो— ऐसी धारणा का सिक्ख जीवन दर्शन में कोई स्थान नहीं। इसके विपरीत सिक्ख मार्ग दर्शन इस प्रकार है :

चूं कार अज़ हमा हीलते दर गुजश्त।
हलाल अस्त बुरदन ब शमशीर दस्त।

(गुरु गोबिंद सिंह)

भावार्थ: जब सभी प्रकार के आग्रह व उपाय असफल हो जाएं तो हथियार उठा लेना धर्मानुसार उचित है।

आदर्श व्यक्तित्व :

सिक्ख का एक आदर्श व्यक्तित्व है। उसकी विशेष पहचान के पाँच चिन्ह (ककार) हैं। इन्हें ककार इसलिए कहा गया है क्योंकि प्रत्येक चिन्ह के नाम का पहला अक्षर 'क' से प्रारम्भ होता है: केश, कंधा, कड़ा, कछहिरा व कृपाण।

वह व्यक्ति जो ये निर्धारित चिन्ह धारण करके अपना निराला अस्तित्व पेश करता है। वह दूसरों की तुलना में आदर्श व्यक्तित्व के लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करने की कहीं अधिक क्षमता रखता है। निश्चय ही उन सबकी तुलना में, जिन्होंने ऐसे अनुशासन या नियमावली नहीं अपनाई। **उसमें बंधुत्व की भावना अधिक प्रगाढ़ होगी।** बिना इन चिन्हों के कोई सिक्ख हो नहीं सकता। जो सिक्ख होते हुए केशों का मुंडन करवाते हैं या दाढ़ी बनवाते हैं, उन्हें पतित कहा जाता है।

धर्म धारण संस्कार (अमृत छकना) :

अमृत छकना प्रत्येक सिक्ख के लिए अनिवार्य है। इसके लिए अधिक छोटी आयु का ना हो, होश संभाली हो। आयु की कोई सीमा निश्चित नहीं है। यह सिक्ख का प्रण है कि वह दस गुरु साहिबान द्वारा निर्धारित मर्यादा के अनुसार जीवन व्यतीत करेगा।

वे सभी नर-नारी, जो किसी भी जाति, वर्ग, वर्ण, देश समाज के हों, जो गुरु साहिब द्वारा दर्शाये धर्म मार्ग का अनुसरण करने की इच्छा रखते हैं, अमृत छकने का अधिकार रखते हैं तथा खालसा (सिक्ख संसद) के सदस्य बन सकते हैं।

सिक्ख नियमावली (रहित मर्यादा) :

सिक्ख नियमावली अथवा आचार-संहिता को सिक्ख रहित मर्यादा

के नाम से जाना जाता है। यह गुरु ग्रंथ साहिब में निहित शिक्षाओं, सिक्ख सभ्यता व सिक्ख परम्पराओं पर आधारित है। इसकी नियमावली में धार्मिक आचार व संस्कार निहित हैं जिनके द्वारा जिज्ञासु में समरूप धर्म का विकास होता है, चाहे वह विश्व के किसी भी कोने में रहता हो। किसी भी व्यक्ति विशेष को इसका अधिकार नहीं कि वह इस नियमावली में परिवर्तन करे। इसका अधिकार केवल मात्र पंथ अर्थात् सम्पूर्ण सिक्ख समाज को है, जिसका नेतृत्व पाँच प्यारे कर रहे हों। ऐसा कोई भी नियम जो आधारभूत शिक्षाओं के विरुद्ध हो, नगण्य होता है। सभी प्रकार के नशे जैसे शराब, तंबाकू तथा ड्रग्स व इनसे बने नशे सिक्ख धर्म में पूर्णतः वर्जित हैं।

सिक्ख धर्म में व्यभिचार को पाप माना गया है। एक सिक्ख किसी दूसरे की पत्नी को अपनी बहन या माता का आदर दे। किसी दूसरे की बेटी को अपनी बेटी जैसा माने। विपरीत में यही नियम स्त्रियों के लिए भी मान्य है।

सिक्ख समाज में नारी :

नारी की सिक्ख समाज में विशेष भूमिका है। नारी की समाज को व परिवार को दी जा रही उत्तम सेवा को श्रद्धा भाव से देखा जाता है। किसी लड़की का जन्म अशुभ नहीं माना जाता। कुड़ीमार अथवा नवजात लड़की की हत्या करने वाले के साथ रोटी-बेटी का संबंध विच्छेद करने का विधान है। वर्तमान समय में यह विधान गर्भ में पल रही संभावित लड़की की भ्रूण हत्या करने वालों पर भी लागू होता है। **सो किउ मंदा आखीअै, जितु जंमे राजान** — के महावाक्य द्वारा नारी को विभूषित किया गया है। सिक्ख धर्म में सती प्रथा का कोई स्थान नहीं। सिक्ख समाज में तो विधवा के पुनर्विवाह का विधान है।

नारी में भी वही एक जैसी आत्मा है, जैसी कि पुरुष में है। आध्यात्मिक विकास में नारी का भी पुरुष के बराबर का अधिकार है। वह संगत में बिना भेद-भाव के उपस्थित होकर गुरुद्वारे में सेवा, कीर्तन, कथा इत्यादि कर सकती है। वह सभी प्रकार के संस्कार का संचालन कर सकती है तथा पाँच प्यारों में भी स्थान पा सकती है।*

सिक्ख नारी पर्दा नहीं करती। दहेज व तलाक वर्जित है। ऐसी वेशभूषा वर्जित है जो शरीर की नग्नता का प्रदर्शन करे तथा कामुकता भड़काए।

सिक्ख संस्कार :

जन्म व नामकरण (नवजात शिशु का) संस्कार, अमृत संस्कार, आनन्द संस्कार (विवाह) व मृतक संस्कार ही अनिवार्य सिक्ख संस्कार हैं। अमृत संस्कार इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

इन संस्कारों के साथ अन्य कोई दूसरी विशेष रीतियाँ सम्बन्धित नहीं हैं। इन सब संस्कारों में गुरु ग्रंथ साहिब में निहित शब्दों का पाठ किये जाने का विधान है।

जब कोई प्राणी मर जाता है तो उसके पार्थिव शरीर का दाह संस्कार किया जाता है व सम्पूर्ण भस्म किसी भी नजदीक की नदी अथवा नहर में प्रवाहित कर दी जाती है। किसी नदी को पवित्र या अपवित्र नहीं माना जाता। किसी मृतक जीव का कोई स्मारक बनाना वर्जित है।

इन सभी संस्कारों का ध्येय जीव को यह याद दिलाना है कि उसका परमात्मा से क्या रिश्ता है। उसकी आत्मा परमात्मा से बिछुड़ी है, उस परमात्मा में उसे समा जाना है। इन सभी संस्कारों ने इस दृष्टि से जीव को सुचेत करना व मार्गदर्शन देना है।

आनंद कारज (सिक्ख विवाह) :

सिक्ख धर्म के अनुसार वैवाहिक संबंध एक पवित्र मिलन है न कि एक शर्तनामा।

धन पिरु एहि न आखिअनि बहनि इकठे होइ॥

एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 788)

भावार्थ: जो मात्र इकट्ठे रहें उन्हें पति पत्नी मत कहो। पति पत्नी तो वे हैं जिनका आत्मिक मेल हो। अविवाहित रहने अथवा ब्रह्मचर्य को, सिक्ख धर्म नहीं मानता। वैवाहिक व पारिवारिक जीवन को प्रतिष्ठित, प्राकृतिक व

उत्तम माना गया है।

मन रे ग्रिह ही माहि उदासु॥

सचु सजमु करणी सो करे गुरुमुखि होइ परगासु॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 26)

आनंद कारज गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में सम्पन्न होता है। वर व वधु गुरु ग्रंथ साहिब की चार बार परिक्रमा करते हैं। प्रत्येक बार शब्द का पाठ तथा गायन होता है। **ग्रंथी साहिब** (सिक्ख ग्रंथी) की देख-रेख में यह संस्कार होता है व जीवन को उस आदर्श में ढालने का मार्गदर्शन करता है जिनका पाठ व गायन का विधान इस संस्कार के लिए है।

विधुर व विधवा के पुनर्विवाह के लिए भी इसी संस्कार का विधान है।

गुरुपर्व (गुरु के त्यौहार) व मेले :

सिक्ख निम्न त्यौहार मनाते हैं :

दस गुरु साहिबान के प्रकाश दिवस, ज्योति में विलीन होने के दिवस, गुरु ग्रंथ साहिब का गुरुगद्दी दिवस, खालसे का सृजना दिवस बैसाखी जो आमतौर पर हर वर्ष 13 अप्रैल को होता है। शहीदी दिवस उन गुरु के सिक्खों के मनाए जाते हैं जिन्होंने अपने प्राण धर्म के लिए अथवा दीन दुखियों की सेवा के लिए न्यौछावर कर दिए।

सिक्ख इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण दिवस भी मनाये जाते हैं।

एक सिक्ख की दिनचर्या :

प्रत्येक सिक्ख के लिए आवश्यक है कि वह सूर्य उदय से पूर्व ही उठ जाए। शौच स्नान के उपरांत वह एक अकाल पुरख परमात्मा का ध्यान करता हुआ वाहिगुरु के नाम का सिमरन करे:

झालाधे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि॥

कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 255)

नित्तनेम की बाणियों का पाठ प्रतिदिन करने का विधान है:

सुबह : जपुजी साहिब, जापु साहिब, दस सवैये

संध्या : रहिरास साहिब

रात्रि : (सोने से पूर्व) सोहिला

हर सिक्ख के लिए अनिवार्य है कि वह अपनी दिनचर्या के दौरान गुरुद्वारे में भी उपस्थित हो कर दर्शन करें और साध-संगत में बैठ कर गुरुबाणी का आनंद प्राप्त करें।

संगत व पंगत :

गुरुद्वारे के दो महत्वपूर्ण लक्षण हैं: (1) **संगत**—गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में हाजिर होना व कथा कीर्तन में सम्मिलित होना (2) **पंगत**—जिसे गुरु का लंगर कहा जाता है। गुरु के लंगर द्वारा सभी श्रद्धालुओं, यात्रियों व अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था होती है। यह समता, बंधुत्व व भाईचारे का प्रतीक है। गुरु के लंगर में ही कथित स्वर्ण व निम्न जाति के लोग, अमीर व गरीब, पंडित व अनपढ़, राजा व भिखारी, सभी एक साथ बिना भेद भाव के एक ही पंक्ति में बैठ कर एक जैसा भोजन करते हैं। इसकी सेवा अभिदान एवं दसबंध द्वारा की जाती है। गुरु के लंगर की संस्था सम्पूर्ण मानवता में सामाजिक समानता लाने में विशेष योगदान देती है।

गुरुद्वारा :

सिक्खों के धार्मिक स्थल को गुरुद्वारा कहा जाता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में मुख्य हाल में पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश अर्थात् आसीन किये जाते हैं जहां पर प्रतिदिन पाठ, कथा व कीर्तन होता है।

गुरुद्वारा साहिब के अंदर जाने से पहले कृपया ध्यान दें :

1. गुरुद्वारा साहिब के अन्दर या अहाते में जाने से पहले जूते, जुराबें बाहर उतार कर साफ रुमाल से सिर ढक कर जाना चाहिए।
2. अगर हाथ-पैर मैले या गंदे ना भी हो तो जल से धो लेने चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अथवा गुरुद्वारे साहिब को अपने दायें तरफ रख के परिक्रमा करनी चाहिये।
3. गुरुद्वारा साहिब के अन्दर दर्शन के लिए जाने में किसी देश, मजहब, जाति वाले को मनाही नहीं पर उस के पास सिक्ख धर्म में विवर्जित तम्बाकू आदि कोई चीज नहीं होनी चाहिए।

4. गुरुद्वारा साहिब के मुख्य हाल में जा कर सिक्ख का पहला कर्म श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे माथा टेकना है। फिर सहज से वाहिगुरु जी की फतह बुलाई जाए। दर्शनों के दौरान जेबों में हाथ डाल के दीवार या खम्बे के साथ खड़ा होना मना है। तैयार बर तैयार होकर दर्शन करो जी।
5. संगत में बैठने में सिक्ख छूत-छात, जाति-पाति, ऊँच-नीच का भ्रम नर-नारी का भेद नहीं करना।
6. गुरुद्वारा साहिब के अन्दर या हद्द में शराब पी कर या किसी प्रकार की नशीली वस्तु लेकर जाना विवर्जित है।

कुठा हुका चरस तंबाकू। गांजा **टोपी** ताड़ी खाकू॥

इन की ओर न कबहू देखै। रहतवंत सो सिंघ विसेखै॥

भाई देसा सिंह जी के रहितनामे के अनुसार सिक्ख टोपी न पहने। मुख्य हाल में प्रवेश पाने पर प्रत्येक को चाहिये कि वह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख हाजिर होकर माथा टेके, नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के उपरांत यथा स्थान ग्रहण करें। कोई भी सिक्ख (नर या नारी) कथा कीर्तन इत्यादि कर सकता है।

कीर्तन, गुरबाणी की गायन कला में संजोकर, गायन वाद्य यंत्रों द्वारा किया जाता है। विशेष अवसरों पर गायन के बीच में कथा, व्याख्यान, इत्यादि का गायन जो सिक्ख इतिहास से संबंधित हो, भी किया जाता है। हर दीवान की समाप्ति के अंत में अरदास (प्रार्थना) होती है जिस में परमपिता परमेश्वर से कृपा की याचना की जाती है कि सम्पूर्ण मानवता को ईश्वर शांति, सुख समृद्धि व सुरक्षा प्रदान करे।

प्रार्थना के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से एक शब्द का पाठ, हुक्म के रूप में लिया जाता है। इसके उपरांत पूरी संगत में कड़ाह प्रसाद बांटा जाता है जिसे मोटे आटे, घी, चीनी व जल से बनाया जाता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में एक निशान साहिब, (पुशाके का रंग बसंती/सुरमयी रंग का झंडा) लहराया जाता है। इसके ऊपर एक खंडा (ऐसी तलवार जिसकी धार दोनों तरफ होती है) होता है। निशान साहिब यानी सिक्ख धर्म पताका सिक्ख के सामयिक व आध्यात्मिक जीवन का प्रतीक है।

प्रत्येक गांव, शहर व महानगर में आवश्यकता के अनुसार गुरुद्वारे बनाये जाते हैं। इन सब की एक जैसी पवित्रता है। कुछ गुरुद्वारे ऐसे हैं जिनका ऐतिहासिक महत्व भी है। पाँच प्रमुख गुरुद्वारे हैं जो शक्ति के प्रतीक तख्त साहिब के नाम से संबोधित किये जाते हैं। ये भक्ति के साथ शक्ति के प्रतीक हैं। ये हैं:

(1) तख्त पटना साहिब (बिहार), (2) तख्त केशगढ़ साहिब, आनंदपुर साहिब, पंजाब, (3) तख्त दमदमा साहिब, तलवंडी साबो, पंजाब, (4) तख्त हजूर साहिब, नांदेड़, महाराष्ट्र, तथा (5) अकाल तख्त साहिब, अमृतसर, पंजाब, इसे सर्वोच्च माना जाता है। इन तख्त साहिबान से समय-समय पर सामाजिक व धार्मिक दिशा निर्देश जारी किये जाते हैं जिन्हें हुक्मनामा कहा जाता है। ये सिक्ख समाज के व्यक्तिगत कानून की भांति सब सिक्खों पर एक समान लागू होते हैं।

सिक्ख धर्म में कोई पुजारी संस्था नहीं है। सिक्ख समाज में जो भी सिक्ख प्रतिदिन गुरुद्वारे में बाणी का पाठ अरदास (प्रार्थना) इत्यादि करता है उसे ग्रंथी सिंह कहते हैं। जो शब्द कीर्तन (प्रभु की उस्ताति गायन) करता है उसे रागी कहते हैं। हम इस लेख का समापन प्रत्येक सिक्ख की रोजाना की अरदास (प्रार्थना) के शब्दों से ही कर रहे हैं:

**‘नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला।’**

भावार्थ: हे अकाल पुरख, हमें सदबुद्धि, विवेक दो। हम हर समय आपको याद रखें। हर शुभ कार्य के लिए हम में उत्साह भरा रहे तथा पूरी मानवता की भलाई के लिए प्रभु आप अपनी कृपा दृष्टि रखें।

वाहिगुरु जी का खालसा॥ वाहिगुरु जी की फतह॥

(भावार्थ: खालसा वाहिगुरु का है, जीत भी वाहिगुरु की है)

यह सिक्ख का एक दूसरे को मिलते समय अभिवादन करने का ढंग है। सिंह-सिंघणी दोनों के लिए यह हुक्म है।



अपनाने योग्य-पाँच ककार

केश

कौमी पहचान के चिन्ह हैं।

कंधा

केशों की सफाई के लिये है।

कड़ा

भ्रमों को छोड़ने का प्रतीक है।

कृपाण

अपनी और गरीब की रक्षा के लिये है।

कछहिरा

अच्छे आचरण का प्रतीक है।